SHIVAJI

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

VIDYAWARTA®

Special Issue, October 2019

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
तथा हिंदी विभाग और IQAC

बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय

वसमतनगर, जि.हिंगोली
Accredited by NAAC B+Grade

के संयुक्त तत्वावधान
आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना

संपादक
डॉ.सुभाष क्षीरसागर
डॉ.रेविता कावले
डॉ.शेख रजिया शहेनाज

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

2019-20

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Publication

October 2019
Special Issue

01

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Special Issue, October 2019

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
तथा हिंदी विभाग और IQAC
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय
बसमतनगर, जि.हिंगोली
Accredited by NAAC B+Grade

के संयुक्त तत्वावधान
आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना

संपादक
डॉ.सुभाष क्षीरसागर
डॉ.रेविता कावले
डॉ.शेख रजिया शहेनाज

Reg.No.U74120 MH2013 PYC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Publication | October 2019 Special Issue | 012

Index

१. समकालीन साहित्य

01) समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री चेतना ||22
डॉ. रेणुका मोरे, नांदेड

02) मृणाल पांडे के निबंध साहित्य में स्त्री-चेतना ||25
डॉ. संतोष राजपाल नागुर, मैसूर

03) समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श ||28
डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री, नालंदा

04) स्त्री मन के गाँठ खोलती गद्यकार महादेवी वर्मा ||29
डॉ. अभिषेक कुमार पटेल, गुण्डरदेही

05) आधी आबादी की आजादी का मंच ||32
डॉ. पद्माकर पांडुरंग घोरपडे, सलोनी जवारलाल राठोड

06) समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्रीचेतना ||35
प्रा. डॉ. सचिन रमेश चोले, लातूर

07) स्त्री जीवन की वेदना और भावनाओं का संघर्ष ||38
प्रा. डॉ. धीरज जनार्धन व्हत्ते, चापोली

08) समकालीन कथासहित्य में चित्रित नारी चेतना ||40
प्रा. कोरेबोईनवाड साईनाथ डी., धर्माबाद

09) समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री चेतना ||42
डॉ. बी. आर. नळे, माजलगाव

10) समकालीन हिन्दी महिला उपन्यासो में स्त्री चित्रण ||45
प्रा. कांबळे एस. एस., हिंगोली

11) समकालीन महिला लेखिका गोरापंत शिवानी एक अध्ययन ||48
लामतुरे वसंत हिरामण, उदगीर

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Publication

October 2019
Special Issue

SHIVAJI COLLEGE, HINGOLI

निर्वाह करना चाहती है। आज उसके जीवन का उद्देश केवल पैसा कमाकर ऐय्यासी जीवन जीने तक सीमित होकर रह गया है। ऐसी लडकियों पर टिप्पणी करती हुई 'रश्मि गौड' अपनी कथा 'चक्रव्यूह' में लिखती है - "कमाने की धून में आज की पीढी पता नहीं क्यों भाग रही है - ब्रांडेड कपडों के लिए? स्मार्ट फोन के लिए? इलेक्ट्रॉनिक आइटम के लिए? बडी बडी गाडियों के लिए? अगर इन्हीं से सुख की डोरी बँधी है, तो हर आदमी सुखी होता. सुख की परिभाषा ही भूलते जा रहे हैं हम लोग।"[७] पढी लिखी होने का मतलब रात दिन नौकरी में व्यस्त रहना न होकर अपने व्यवहार मे, आदर्शों में सुसंस्कृत बनने तथा परिवर की मानमर्यादा और इज्जत को अपनी मानमर्यादा और इज्जत मानने की क्षमता से विकसित होना है। आज वह क्षमता उनमें दिखाई नहीं देती। आजके समाज को वृध्दाश्रम, अनाथाश्रम, पालनाघर, कुमारी माता की देन में उनका भी बराबरी का हिस्सा है।

कूल मिलाकर हम कह सकते है कि, स्त्री जिस गंदगी मे बाहर निकलकर अपना व्यक्तित्व और अस्तित्व को तराशना चाहती थी, आज भूमंडलीकरण, उदारीकरण, बाजारवाद और उपभोक्तावादी शक्तियों ने बडी चालाकी से स्वतंत्रता, समता और समानताओं के नाम पर स्त्री को फिर उसी गंदगी में धकेलना शुरू किया है। उसे अपनी जड से काटकर अपने तथा पुरूषों के हाथ का झूनझूना और उपभोग की वस्तु में तब्दिल करना शुरू किया है। दु:ख की बात यह है कि, महिला रक्षा, सुरक्षा और उसके हक तथा अधिकारों की बात करनेवाली सभी संस्थाएँ स्त्री के तन, मन, इच्छा, अकांक्षा और सपनों पर होनेवाले अतिक्रमणों पर चुप्पी साधकर तमाशबीन की तरह चुप बैठी है। ऐसी स्थिती में उचित शिक्षा और सही संस्कार तथा प्रभावी संस्थाओं की सजगता ही स्त्री जीवन और उसके भविष्य को बचा सकती है।

संदर्भ-ग्रंथ सूचि :

१. रश्मि कुमार, मन्मयी, साहित्य अमृत (मासिक), अगस्त २०१४, प. क्र. २६.
२. इंदु शुक्ला, वीमेन्स लिव से कहाँ तक ?, साहित्य अमृत (मासिक), सितंबर २०१५, प. क्र.४३.
३. इंदु शुक्ला, वीमेन्स लिव से कहाँ तक ?, साहित्य अमृत (मासिक), सितंबर २०१५, प. क्र.४३.
४. इंदु शुक्ला, वीमेन्स लिव से कहाँ तक ?, साहित्य अमृत (मासिक), सितंबर २०१५, प. क्र.४४.
५. निर्वाणिता त्रिपाठी , अंधा कानून, साहित्य अमृत (मासिक), दिसंबर २०१५, प. क्र. ११७.
६. निर्वाणिता त्रिपाठी, अंधा कानून, साहित्य अमृत (मासिक), दिसंबर २०१५, प. क्र. ११७.
७. रश्मि गौड, चक्रव्यूह, साहित्य अमृत (मासिक), नवंबर २०१४, प. क्र. ४८.

❑❑❑

10

समकालीन हिन्दी महिला उपन्यासो में स्त्री चित्रण

प्रा. कांबळे एस. एस.
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली

****

लता को आसमान छुने की तमन्ना है; परंतु किसी के सहारे बिना उसका यह सपना पुरा होना कठिन काम होता है। जब उसे किसी वृक्ष का या अन्य किसीका मजबुत सहारा प्राप्त होता है तो लता बहार पर आती है और उसकी शोभा देखकर जिसकी कली खिल जाती है। इसी प्रकार भारत में पुरुष-सत्ताक संस्कृती के कारण देश में स्त्री का विकास पुरुष के सहारे हो पाता है। वर्तमान परिस्थिती में यह कुछ आंशिक सत्य लगता है। स्त्री और पुरुष एक गाडी के दो पहिए है। एक के बिना दुसरा अधुरा है। आज के युग में भारतीय समाज व्यवस्था में महिलाओं को पुरुषों के समान शिक्षा,धर्म, और राजनैतिक क्षेत्रों मे और धन सम्पत्ति एवं उत्तराधिकार के अधिकार प्राप्त हो चुके है। आज हर क्षेत्र में नारी अग्रसर होती दिखाई देती है। शिक्षक से लेकर राष्ट्रपती पद तक नारी की उडान गौरवस्पद है। भारतीय संविधान द्वारा समानता का अधिकार प्रदान करना सचमुच नारी के जीवन में नारी को सामाजिक सम्मान बुध्दकाल में ही प्राप्त हो चुका था।

वर्तमान व्यवस्था में स्त्री-पुरुष की असमानता को भारतीय समाज को अलग चित्रण करने का प्रयास अनेकोंने किया है। आज की स्त्री अपना अस्तित्व पहचान चुकी है। वह समाज से हक माँग रही है । स्त्री उपन्यासों में स्त्री का चित्रण कर उसके उपर चिंतन हो रहा है। महिलाएँ अपने उपन्यासों में आप-बिती का वर्णन कर रही है। अनुभवों को कलमबद्ध कर रही है।

आज महिलाएँ सजग हो चुकी है, वह आत्मनिर्भर होना चाह रही है। पुरुषों के बराबर काम कर रही है। हिन्दी के महिला लेखिकाएँ उपन्यासों में पुरे साहस के साथ अभिव्यक्त हो रही है। वह अपने अधिकारों को लेकर लढ रही है। समाज व्यवस्था के प्रति विद्रोह कर रही है। पुरुषसत्ताक व्यवस्था से वह छुटकारा चाहती है। समाज में घटित होता है। उसका चित्रण उपन्यासों में किया जाता है।

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

समकालीन उपन्यासों में महिलाओं के जीवन में आये हुए परिवर्तन का चित्रण होता है। सामाजिक चुनौतियाँ, विसंगतियाँ, अन्तर्विरोध सामाजिक समस्याएँ आदि का सशक्त चित्रण उपन्यासों में होता है। आज हिन्दी उपन्यास साहित्य सशक्त चित्रण उपन्यासों में होता है। आज हिन्दी उपन्यास साहित्य में सामाजिक परिवर्तन में यथार्थ चित्रण करने का प्रयास किया जा रहा है।

समकालीन चेतना का प्रतिनिधित्व करते हुए उषा प्रियवंदा 'पचपन खंबे लाल दिवारे' रुकोगी नहीं राधिका, मन्नू भंडारी - 'आपका बंटी', मंजुल भगत- 'लेडी क्लब', मृणाल पांडे- 'पटरंग पुरान', मृदुला गर्ग, - 'चित्तकोबरा', निरोपमा सोवती- 'बँटता हुआ आदमी', मेहरुन्निसा परवेज- 'आँखो की दहलीज', मालती जोशी - 'पाषाण युग', मिनाक्षी पुरी- 'जान-पहचान', ममता कालिया- 'बेघर', राजी सेठ - 'तत्सम', नासिरा शर्मा - 'सात नदियाँ एक समंदर', अमृता प्रितम- 'पिंजर', मैत्रेयी पुष्पा- 'इंदन्नमम', रमणिका गुप्ता - 'सिता', कृष्णा सोबती 'सुरजमुखी अंधेरे के'आदी प्रमुख है। इन उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में समाज व्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया है।

अधुनिक काल में शिक्षा के प्रसार एवं प्रचार के कारण महिला अपनी स्वतंत्रता और अधिकारो के प्रति सचेत हो गई है। प्राचीन काल से नारी को एक भोग्य वस्तु के रुप में देखा गया था। आज की नारी सडी गली परम्पराओं से मुक्त जीवन जिना चाहती है। हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श को लेकर बहुत बहस हो रही है। मृणाल पांडे के अनुसार "नारी विमर्श कतई स्त्रियोंको वृहत्तर समाज से अलग -थलग रखकर देखने और हर क्षेत्र में पुरुषो के खिलाफ उन्हें प्रोत्साहित करने का दर्शन नही है। यह तो एक समग्र दृष्टीकोन है।"[1]

आज समाज में नारी समस्याएँ एवं नारी के गौरव को महत्व प्राप्त हुआ है। महिला रचनाकारों ने स्त्रियों की समस्याओंको समाज के सामने रखा वल्कि एक मानव के रुप में स्थापित करने का प्रयास अपने उपन्यासों में किया है।

अमृता प्रितम ने 'पिंजर' उपन्यास में महिलाओं की पिडा और वैवाहिक जीवन की कटु अनुभुतियोंको न झिझकते हुए चित्रित करती है। इस उपन्यास में 'पुरो' के माध्यम से देश-विभाजन पश्चात स्त्रियों की सामाजिक स्थिती का यथार्थ चित्रण किया है। पुरो की शादी तय होती है। दुर्भाग्यवश अपनी पुश्तैनी बदले की आग में गाँव का मुस्लीम युवक उसे जबरदस्ती भगा लेता है इस बात से 'पुरो' कहीं की नही रहती। उसे ना समाज स्विकार कर लेता है ना उसके घरवाले। हताश होकर हमीदा नाम से जीवन जीती है। वह सोचती है "वास्तव में वह न हमीदा थी, न पुरो, वह केवल पिंजर जिसका कोई रुप न था कोई नाम न था ।"[2]

परिवर्तनवादी विचारो को प्रवाहित करनेवाली मेहरु[illegible] परवेज अपने उपन्यास 'आँखो की दहलीज में' समाज व्यव[illegible] चक्की पिसती हुई संघर्षमयी नारी को अभिव्यक्त करती है। इस उपन्यास की नायिका तालिया परम्पराओ का विरोध करते हुए [illegible] के स्वर में कहती है - "मैं इस घर के वातावरण से इतना घब[illegible] हुँ की बाहर भागने की बहुत इच्छा होती है यदि आप हाँ नही [illegible] मे किसी भी वक्त किसी के भी साथ शादी कर लुँगी, अंजाम [illegible] कुछ भी हो।"[3]

'इदन्नमम' उपन्यासों में मैत्रेयी पुष्पा ने नारी शक्ती से [illegible] कराया है। नारी अब अबला नहीं सबला है। उपन्यास की नायि[illegible] मंदाकिनी खिलाफ आवाज उठाती है। उसमें संघर्ष, सामर्थ्य, [illegible] गुण और विचार की शक्ती है। वह सोनपुरा गाँव के लोगो का [illegible] दुर करना चाहती है। उनके पिता की हत्या होती है। वह दादा [illegible] रहती है। लोगों के लिए वह उसे ही धमकाती है "अभिलाषु [illegible] सलामत क्रेशर चलाते रहो, बस इस बात के लिए ठाकुर [illegible] माँगते रहना ।"[4] यहाँ तक की नही तो वह क्रेशर पर काम [illegible] मजदुरो को भडकाती है "तुम लोग गुँगे बहरे से लगे रहते हो, [illegible] क्यों नही माँगते पगार, अपना हक, अधिकार थे नहीं दे[illegible] करते हो काम।"[5]

मृदुला गर्ग का उपन्यास 'चित्तकोबरा' में अ[illegible] द्वारा की गई उपेक्षा से रिचर्ड में अपना प्रेम ढुंढती है।

ममता कालिया का उपन्यास 'दौंड' में भुमंड[illegible] व्यासायिकता, आर्जिविकावाद विज्ञानबाजी उपभोक्तावाद [illegible] मिश्रण से बने मनुष्यों की कहानी बहुत प्रभावकारी ढंग [illegible] करती है। इसमें रेखा, स्टेला, राजुल को कामकाजी [illegible] महिलाओं के रुप में चित्रित किया है।

मृदुल गर्ग का उपन्यास 'कठगुलाब'के सभी नारी पा[illegible] के अंत तक संघर्ष करते नजर आते है। अपनी पहचान [illegible] विद्रोह करती हुई दिखाई देती है। नर्मदा, मारियान, आसिम[illegible] पुरुषोके शोषण का शिकार होती है।

उषाजी का पहला उपन्यास 'पचपन खंबे लाल दि[illegible] उपन्यास में सुषमा एक सुंदर प्रौढ अविवाहित युवती का [illegible] द्विधा अवस्था को दर्शाती है।घर की साधारण आर्थिक परि[illegible] पारिवारीक कर्तव्य के कारण वह नौकरी करती है। लेकीन [illegible] नही कर पाती। सुषमा नील को ठुकराकर अपने पचपन खम्[illegible] चहारदिवारी में घुटकर रह जाती है। पिता अपाहिच है, भाई [illegible] छोटे है। इसी कारण सुषमा बडी होने के नाते अपने परिवार [illegible]

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

पालन पोषण करती है। परिवारिक शोषण का शिकार सुषमा बनती है. उनके पिता कहते है - "निर्मल को देखो नौकरी करती है. आराम से रहती है। हमारी सुषमा भी वैसे ही रहेगी।"[६]

पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए सुषमा 'नील' को स्विकार नहीं करती आज के मतलबी दुनिया में कोई किसी का नहीं होता. कृष्णा मौसी इसी दुनियादारी की बाते कहती है - "कुछ अपने ज्ञान में सोचा सुषमा यह भाई-बहन किसी के नहीं होते। सब अपने अपने घर के होंगे। आज की दुनिया में कौन किसीका होता है।"[७]

उषा प्रियवंदाजी मानवीय स्वतंत्रता की पक्षधर थी। उनका कहना है की मानवीय स्वतंत्रता ही मानव मुल्यों के विकास में सहायक है। पुरुष और नारी दोनो एक समान है 'रुकोगी नही राधिका' में राधिका इसी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती है। वह किसी भी किमत पर अपनी इच्छाओंकी बलि देना नही चाहती। वह अपने स्वाभिमान के लिए सबसे अलग हो जाना चाहती है। स्व अधिकारोंको लेती है।

ममता कालिया का उपन्यास 'बेघर' में स्त्री के विवाह पुर्व कुवारी होने की धारणा को उजागर किया है। पुरुष विवाह के पुर्व कहीं भी, किसी भी स्त्री के साथ शारीरिक संबंध स्थापित कर सकता है लेकीन औरत के लिए यह संभव नहीं। संजीवनी उपन्यास की नायिका परमजीत की प्रेमिका है। परमजीत को पुर्णतः समर्पित होती है जब परमजीत को पहले का तथ्य उजागर होने पर संजीवनी को प्रताड़ित करना शुरु करता है। अंत में संजीवनी उससे छुटकारा पाने के लिए आधाररहित रिश्ते को कोर्ट में ले जाती है।

रमणिका गुप्ताजीने 'सीता' उपन्यास की 'सीता' सीता रामायण की त्याग और तपस्या की सीता नही है। पुरुषी दंभ से औरत की अस्मिता को बचाने के लिए धर्म से भी टकराने वाली सीता है। आज नारी जीवन के दस्तकों को लेकर इसकी रचना की है। आज की नारी बहुत संघर्ष कर रही है। सर्वहारा वर्ग के लिए लढ रही है। सीता दलित आदिवासी औरत की व्यथा कथा है। सीता के प्रति लेखिका के मन में अटुट आस्था है क्योंकी अब वह अपने से बाहर खडी ...ओं के लिए लढ रही है। सीता घुस्से में हिन्दी बोलने लगती है "... साले रखनीवाले दोगले। घर मे जोरु रखते कोलरी में रखनी। ... हाथ में लड्डू। सब रखनियोंकी औलाद को गछवा कर जेदाद में ... न दिलवाय तो हमारा नाम सीता नाय ।"[८]

रमणिकाजीने 'सीता' मजदुर संघटन के भीतर की स्त्री ... को इमानदारी से चित्रित किया है। सीता द्वारा जीवन के ... दिखाने का प्रयास किया है। दलित औरत के साहस का ... उपन्यास।

निष्कर्ष :

भारतीय समाज व्यवस्थाने हमारी संस्कृती, धर्म, निती द्वारा स्त्रियों पर शेकडो वर्षोंसे बहुत सारे प्रतिबंध लगाए थे। लेकीन अभी नही वर्तमान में स्त्री अब सबला बनकर जीवन जीना चाहती है। महिलाएँ अब हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हो चुकी है। नारी के जीवन में गाँव से लेकर महानगर तक परिवर्तन आता दिख रहा है। वर्तमान में महिलाएँ नारी चित्रण सशक्त रुप में हर विधा में कर रही है। समाज में अपने अस्तीत्व की पहचान बना रही है। नारी का रुप भारतीय समाज, सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक आदर्श भारत गौरव को सम्मानित कर रही है। महिलाओं को विकास के अवसर देने होंगे ताकि वह विकास कर अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र के विकास में योगदान दे सके।

संदर्भ :

१. परिधी पर स्त्री - मृणाल पांडे- पृष्ठ क्र. ४७
२. पिंजर - अमृता प्रितम- पृष्ठ क्र२५
३. आँखों की दहलीज - मेहरुन्निसा परवेज - पृष्ठ क्र. १४
४. इदन्नमम - मैत्रेयी पुष्पा -पृष्ठ क्र. २३१
५. वही - वही - पृष्ठ क्र. २७०
६. पचपन खंबे लाल दिवारे- उषा प्रियवंदा -पृष्ठ क्र.४०
७. वही - वही - पृष्ठ क्र. १३
८. सीता - रमणिका गुप्ता - पृष्ठ क्र. ६२

❑❑❑

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)